रजि० नं० बी ४४४८
लाअिसेन्स नं० १५

हमें नअी आर्थिक नीति चाहिये

हरिजनसेवक

दो आना

(संस्थापक : महात्मा गांधी)

भाग १७ सम्पादक : मगनभाअी प्रभुदास देसाअी अंक १३

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाअी देसाअी
नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद–९

अहमदाबाद, शनिवार, ता० ३० मअी, १९५३

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६
विदेशमें रु० ८; शि० १४

भारतकी आर्थिक रचना

सवाल — आपको रायमें भारतकी भावी आर्थिक रचनाका आधार क्या होना चाहिये? अुसमें सेंविंग बैंकों, बीमा कंपनियों वगैरा संस्थाओंका क्या स्थान होगा?

जवाब — भारतकी और अुससे भी आगे बढ़कर सारी दुनियाकी आर्थिक रचना अैसी होनी चाहिये कि अुसमें किसीको अन्न और वस्त्रके अभावका कष्ट न भोगना पड़े। दूसरे शब्दोंमें, हरअेकको काफी काम मिलना चाहिये, ताकि वह अपना गुजर ठीकसे चला सके। और यह आदर्श हर जगह तभी सिद्ध किया जा सकता है, जब कि जीवनकी बुनियादी जरूरतोंके अुत्पादनके साधन आम लोगोंके अधिकारमें हों। जिस तरह अीश्वरकी हवा और पानी सबको छूटसे मिलते हैं या मिलने चाहियें, अुसी तरह अुत्पादनके ये साधन भी सबको छूटसे मिलने चाहियें। वे दूसरोंके शोषणके लिअे व्यापारके साधन नहीं बनाये जाने चाहियें। कोअी देश, राष्ट्र या दल अुन पर अपना अेकाधिकार कायम करे तो यह अनुचित होगा। अिस सादे सिद्धान्तकी अुपेक्षा ही आजकी अुस गरीबी और कंगालीकी जड़ है, जो हम न केवल अपने अिस दुःखी देशमें बल्कि दुनियाके दूसरे हिस्सोंमें भी देख रहे हैं। खादी-आन्दोलन अिस बुराअीको दूर करनेके अिरादेसे ही शुरू किया गया है। मैंने जो आर्थिक सुधार सूचित किये हैं, अुनके हो जाने पर भी सेंविंग बैंक और बीमा कंपनियां रहेंगी; लेकिन तब अुनकी पूरी कायापलट हो जायगी। आज भारतके सेंविंग बैंक अुपयोगी होते हुअे भी गरीबसे गरीब लोगोंको लाभ नहीं पहुंचाते। और बीमा कंपनियां तो गरीबोंके लिअे जरा भी अुपयोगी नहीं हैं। मैंने देशके आर्थिक पुनर्निर्माणकी जो आदर्श योजना सुझाअी है, अुसमें वे क्या हिस्सा ले सकती हैं, यह मैं नहीं कह सकता। सेंविंग बैंकोंका काम यह होना चाहिये कि वे गरीबसे गरीबको भी अपनी पसीनेकी कमाअीमें किफायत करने लायक बनायें और आम तौर पर देशके हितसाधनमें लगे रहें। जैसा कि मैं पहले कह चुका हूं, ज्यादातर सरकारी संस्थाओंमें मेरी श्रद्धा नहीं रही है; फिर भी सेंविंग बैंक अपने आपमें अच्छे हैं। लेकिन आज दुर्भाग्यसे अुनकी सेवायें केवल शहरी जनताको ही प्राप्त हैं। और जब तक हमारा सुवर्ण-भंडार भारतके बाहर रहता है, तब तक अिन बैंकोंका मुश्किलसे भरोसा किया जा सकता है। लड़ाअी छिड़ जाने पर न सिर्फ ये बैंक बिलकुल बकार हो जायंगे, बल्कि लोगोंके लिअे अभिशापरूप सिद्ध होंगे; क्योंकि सरकार अिन बैंकोंमें जमा किये गये पैसोंका अुपयोग खुद जमा करानेवालोंके खिलाफ भी करनेमें पीछे नहीं हटेगी। जिस सरकारी संस्था पर लोगोंका नियंत्रण नहीं है और जो लोगोंके कल्याणके लिअे नहीं चलाअी जाती, अुस पर यह भरोसा नहीं रखा जा सकता कि वह संकटके समय लोगोंके प्रति वफादार रहेगी। अिसलिअे जब तक यह मुख्य शर्त पूरी नहीं होती, बैंक भी अन्तमें लोगोंको गुलामीमें बांध रखनेवाली जंजीरें ही साबित हो सकते हैं। वे रह सकते हैं, लेकिन हमें समझ लेना चाहिये कि अुनके जैसी निर्दोष संस्थायें भी हमें मौका आने पर कैसी हानि पहुंचा सकती हैं।

('यंग अिंडिया', १५–११–'२८)

गांवोंमें फिरसे जान तभी आ सकती है, जब वहांकी लूट-खसोट रुक जाय। बड़े पैमाने पर मालकी पैदावार गांवोंकी प्रत्यक्ष या परोक्ष रूपसे होनेवाली लूटके लिअे जिम्मेदार है, क्योंकि अुसके साथ होड़ और बाजारोंकी समस्या जुड़ी हुअी है। अिसलिअे हमें अिस बातकी सबसे ज्यादा कोशिश करनी चाहिये कि गांव हर हालतमें स्वावलम्बी और स्वयंपूर्ण हो जायं। वे अपनी जरूरतें पूरी करने जितनी ही चीजें तैयार करें। अगर ग्रामोद्योगके अिस अंगकी अच्छी तरह रक्षा की जाय, तो फिर भले ही देहाती लोग आजकलके अुन यंत्रों और औजारोंसे भी काम ले सकते हैं, जिन्हें वे बना और खरीद सकते हैं। शर्त सिर्फ यही है कि दूसरोंको लूटनेके लिअे अुनका अुपयोग नहीं होना चाहिये।

('हरिजनसेवक', २९–८–'३६)

अगर देशको मैं अपने दृष्टिकोणका बना सका, तो भावी समाज-व्यवस्थाकी बुनियाद ज्यादातर चरखे और अुससे निकलनेवाले सारे फलितार्थों पर खड़ी की जायगी। अुसमें वे सब चीजें शामिल होंगी, जिनसे देहातियोंकी भलाअी हो। लेखकने जिन अुद्योगोंका जिक्र किया है, अुनका स्थान भी तब तक रहेगा, जब तक वे देहातों और देहाती जीवनका गला न घोटने लगें। मेरी कल्पनामें यह जरूर है कि देहातकी दस्तकारियोंके साथ-साथ बिजली, जहाज बनाना, कलें तैयार करना और अिसी तरहके दूसरे अुद्योग भी रहेंगे। मगर कौन मुख्य और कौन गौण रहे, अिसका क्रम अुलट जायगा। आज तक बड़े-बड़े कारखानोंकी योजना अिस तरह बनती रही है, जिससे गांवों और ग्रामोद्योगोंका नाश हुआ है। आनेवाली शासन-व्यवस्थामें बड़े अुद्योग गांवों और अुनकी कारीगरीके मातहत रहेंगे। मैं समाजवादियोंकी अिस मान्यतासे सहमत नहीं हूं कि जब राज्य बड़े कारखानोंकी योजना बनानेवाला और अुनका मालिक हो जायगा, तब जीवनके लिअे जरूरी चीजें बड़े कारखानोंमें तैयार करनेसे आम लोगोंका भला होगा।

('हरिजनसेवक', २७–१–'४०) मो० क० गांधी

रचनात्मक कार्यक्रम

[दूसरा संस्करण]

लेखक : गांधीजी

अनु० काशिनाथ त्रिवेदी

कीमत ०–६–० डाकखर्च ०–२–०

नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद–९

www.vinoba.in

गांधीजीकी मजदूर-नीति

गांधीजीने हमें जो कुछ बताया, वह अेकदम नअी चीज हो, अैसी बात नहीं। अुन्होंने मानव-जातिके बुनियादी अुसूलों और शाश्वत सचाअियोंको अपने व्यवहारमें ढालकर हमें दिखाया। अुन्होंने हमें अिस बातकी सच्ची समझ दी कि व्यक्तियोंमें और समुदायोंमें आपसमें कैसे सम्बन्ध होने चाहियें। समाजमें संघर्ष न रहे, अिसके लिअे मनुष्योंके आपसी सम्बन्ध कैसे होने चाहियें और अुनका निर्माण किस तरह किया जाय, अिसकी वे अेक पूरी पद्धति हमारे लिअे गढ़ गये हैं। समाज-जीवनमें सुन्दर समन्वयकी स्थापना करना ही अुनकी कोशिशका लक्ष्य था। अुन्होंने हमें प्रेम और अेक-दूसरेकी सेवाके सिद्धान्तोंका पालन करते हुअे शांतिपूर्वक हिलमिलकर रहनेकी कला सिखायी।

हम लोग अकसर यह कहते हैं कि हमें सारी समस्यायें हल करनेमें लोकतंत्रकी नीति अपनानी चाहिये। हमें याद रखना चाहिये कि लोकतंत्रात्मक दृष्टिकोण और पद्धति किसी पर कभी बाहरसे लादी नहीं जा सकती। अुसका अन्दरसे विकास होना चाहिये। लोकतंत्रके बारेमें पढ़ने, लिखने, बोलने और सुनने आदि पर कितनी ही मेहनत क्यों न की जाय, अुससे मनुष्य लोकतंत्रका अनुयायी नहीं बन सकता। लोकतंत्र कोरा सिद्धान्त नहीं, वह व्यवहारकी बात है।

दूसरे पैगम्बरोंकी तरह गांधीजीने भी हमें यही सिखाया कि लोकतंत्रका आरम्भ घरसे होना चाहिये। अुसका आरम्भ पहले व्यक्तिसे होना चाहिये। अुसके बाद वह धारे-धारे सारे समाजमें व्याप्त हो जायगा। लोग अभिमान छोड़ें, अेक-दूसरेसे हिलमिलकर रहनेकी कोशिश करें और अुसके लिअे अनुकूल वृत्ति निर्माण करें — लोकतंत्रका असली अर्थ यही है। अगर मैं यह आग्रह करूं कि मैं जो कुछ कहता हूं वह बिलकुल सही है, और दूसरे लोग जो कुछ कहते हैं वह बिलकुल गलत है, तो हमारे प्रतिपक्षी यही बात अितने ही जोरके साथ हमसे भी कह सकते हैं।

सच्ची लोकतंत्रात्मक पद्धति यह होगी कि दोनों अपनी-अपनी बात अेक-दूसरेके सामने रखें और धैर्य, अुदारता और सहानुभूतिके साथ अुसे समझनेकी कोशिश करें। अैसा हो और अेक-दूसरेसे मेल साधनेके लिअे अपनी वृत्ति और व्यवहारमें आवश्यक परिवर्तन किया जाय, तो दोनोंके लिअे सन्तोषप्रद सही निर्णय पर पहुंचा जा सकता है।

हम लोगोंका अर्थशास्त्रका सारा ज्ञान पश्चिमसे आया है। और पश्चिमके अर्थशास्त्रीय विचार वहांके विशिष्ट राजनीतिक विकासकी, खासकर अुपनिवेशवादकी, अुपज हैं। अुसकी बुनियाद रंगीन जातियोंके अूपर गोरी जातियोंकी प्रभुत्वकी फिलसूफी पर है। शासक वर्गोंने अपनी समृद्धिके लिअे अिन अुपनिवेशों और बस्तियोंका शोषण किया। अेक देशने दूसरे देशके मजदूरोंका शोषण किया। शासक जातियोंने सोचा कि सारी दुनियाकी रंगीन जातियां मेहनत-मशक्कत करके अुनके अुद्योग-धन्धोंके लिअे कच्चा माल पैदा करनेको ही जनमी हैं। कच्चे मालकी कीमत धूर्ततासे जान-बूझकर नीची रखी गअी और तैयार माल कच्चा माल पैदा करनेवाले देशोंके बाजारमें अूंचे भावसे बेचा गया। नतीजा यह हुआ कि पश्चिमी देश अुद्योग-धन्धोंमें पिछड़े हुअे पूर्वी देशोंको नुकसान पहुंचाकर धनी बन गये। अिन पश्चिमके आर्थिक सिद्धान्तोंको, जो 'शोषक-शोषित' वाली अर्थ-रचनाकी अुपज हैं, हमें अपने दिमागसे निकाल देना चाहिये। हमें अपने ही देशकी खेती पर आधार रखनेवाली अर्थ-रचनाके बारेमें सोचना होगा, जो बुनियादी तौर पर पश्चिमी देशोंकी अर्थ-रचनासे भिन्न है।

हमें यह नहीं भूलना चाहिये कि आजकी दुनियामें अब अैसा कोअी अुपनिवेश नहीं बचा है, जिसका कोअी आनन्दसे शोषण कर सके। हमें अपने ही पांवों पर खड़ा होना होगा। आज हमें केवल अुद्योग-धन्धोंमें लगे हुअे मजदूरोंके लिअे ही नहीं, बल्कि अिस प्राचीन भूमिके ३६ करोड़ लोगोंके लिअे ज्यादा अन्न, ज्यादा मकान, ज्यादा कपड़ों और दवाअी-दारू व शिक्षाकी समुचित सुविधाओंकी जरूरत है। अिस ध्येयको प्राप्त करनेके लिअे हमें सबको काम देनेकी व्यवस्था करनी होगी।

देशके सारे सशक्त लोगोंको अपनी शारीरिक शक्ति और प्राप्त साधन-सामग्रीका अुपयोग अैसी कोअी चीज पैदा करनेमें करना चाहिये, जो हमारे देशके लाखों-करोड़ों लोगोंकी जरूरतें पूरी करनेमें काम आ सके। जब तक हम देशके सब लोगोंको काम नहीं देते, जीवनकी भौतिक सुख-सुविधाओंके लिअे हमारे पास काफी धन नहीं हो सकता। हम अपने भौतिक अस्तित्वके लिअे दूसरे किसी देश पर निर्भर नहीं कर सकते।

आजकी दुनियाके मानसिक विकास और वैज्ञानिक प्रगतिको देखते हुअे १९ वीं सदीके पश्चिमी आर्थिक विचार, कार्ल मार्क्सके सिद्धान्त और रूसी अर्थ-व्यवस्था पुरानी पड़ गअी है। दुनियामें आज रोज-रोज तेजीसे जो सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक परिवर्तन हो रहे हैं, अुन्हें हमेशा नजरके सामने रखते हुअे हमें नवभारतके निर्माणमें अपना सहयोग देनेकी बात सोचनी चाहिये। आग बढ़ती हुअी दुनियाके साथ हमें भी अपना विकास करना चाहिये।

१९२२ से आरम्भ होनेवाले दशकमें मार्क्सवादी साहित्यकी रेल-पेल हो गअी। मैंने ध्यानसे अुसका अध्ययन किया और अिस नतीजे पर पहुंचा कि मार्क्सवाद पुराने आर्थिक सिद्धान्तोंकी तीव्र प्रतिक्रियाके सिवा और कुछ नहीं है। फासिज्म और कम्युनिज्म अेक ही सिक्केके दो पहलू हैं। दोनों मानव-जीवनके केवल भौतिक पहलुओं पर ही जोर देते हैं। वे पूर्वसे चूसे हुअे धनको लूटने और हथियानेकी होड़की अुपज हैं। मार्क्सवाद शासक वर्गोंके हाथमें अिकट्ठा होनेवाले धनके खिलाफ पैदा हुअी प्रतिक्रिया है।

भारतमें पूंजीवादके साथ लड़नेमें हमारे सामने कोअी अैसी कठिनाअी नहीं है, जिसे जीता न जा सके। क्योंकि अुसकी जड़ें अभी हमारे देशमें पूरी तरह जमी नहीं हैं। शक्तिका जो भी दिखावा वह करता है, अुसका कारण मध्यम वर्गोंका अुसे मिलनेवाला समर्थन है। अिसलिअे हमें सम्प्रदायवादके शिकार न होकर राष्ट्रीय विकासकी दृष्टिसे सोचना चाहिये।

महात्मा गांधीने अिस चीजको लगभग ३० साल पहले समझ लिया था। अुन्होंने मजदूरोंको देशकी सेवाके लिअे संगठित होनेका अुपदेश दिया। पूंजीपतियोंके साथ मुनाफेमें हिस्सा बंटाना अुन्हें पसन्द नहीं था। वे मालिकों और मजदूरोंके बीच लुटेरोंकी साझेदारी नहीं चाहते थे। अिसलिअे अुन्होंने सारे औद्योगिक झगड़ोंका निबटारा करनेके लिअे पंच-पद्धतिका विकास किया।

हममें से हरअेकका यह देखनेका फर्ज है कि कोअी हमारे अुत्पादनके साधनोंको तोड़-फोड़कर अुन्हें बरबाद न करे। जो मशीनें लोगोंके भलेके लिअे चीजें और सुख-आरामके साधन तैयार करती हैं, अुनके साथ छेड़छाड़ या दस्तंदाजी नहीं की जानी चाहिये।

अगर कभी हड़ताल करना ही हो तो वह शांतिपूर्ण होनी चाहिये। अुसका रूप अन्यायके खिलाफ सत्याग्रहका होना चाहिये। वह पूरी तरह अहिंसक होनी चाहिये। लेकिन हमें समझना चाहिये कि 'हड़तालके हक' का नारा अब पुराना और बेकार हो गया है। अब अुसका स्थान 'काम करनेका हक' के नये नारेको देना चाहिये। हड़ताल कोअी हक नहीं है; वह तो जिम्मेदारी है। काम करनेसे अिन्कार कोअी हक नहीं माना जा सकता,

www.vinoba.in

क्योंकि अुससे किसीको लाभ नहीं होता। वह समस्याके हलका नकारात्मक मार्ग है।

पश्चिमके देश हड़तालके हकके बजाय काम करनेके हकके अिस नये दर्शनको दिनोंदिन ज्यादा समझने और मानने लगे हैं। यह दर्शन हमें गांधीजीने सिखाया था। यह अुस पंच-फैसलेकी पद्धतिमें समाया हुआ है, जिसे गांधीजीने औद्योगिक झगड़ोंके निबटारेके लिअे विकसित किया था।

मजदूर केवल आर्थिक प्राणी ही नहीं है। अुसे अपने सामाजिक और वैयक्तिक वातावरणमें समग्र रूपमें देखना चाहिये। कम्युनिस्ट सोचते हैं कि हरअेक मनुष्य टुकड़ोंमें जीता है, जबकि सर्वोदय सम्पूर्ण मानवको महत्त्व देता है। अगर मनुष्य-जातिको शांतिसे रहना है, तो अिसका महात्मा गांधीके अुपदेशोंका आसरा लिये सिवा दूसरा कोअी रास्ता नहीं है।

खंडुभाअी देसाअी

[१ अप्रैल, १९५३ के 'अिकॉनामिक रिव्यू' के आधार पर]

विकेन्द्रीकरण

अेक बार अुचित सन्तुलनवाली अर्थ-रचनाको अपनानेका निर्णय कर लेनेके बाद गुणों पर आधारित सभ्यताका रास्ता पूरी तरह खुल जाता है। आर्थिक सुरक्षाकी और गिरते हुअे बाजारों तथा टूट रही अर्थ-व्यवस्थाके डरसे मुक्ति पानेकी कुंजी हाथमें आ जानेके बाद ब्रिटेन व्यक्तियों और समाज दोनोंके रूपमें अपनी प्रजाके लिअे कल्याणकारी जीवनकी खोजमें पूरी शक्तिसे लग सकेगा।

तब अुसे खयाल होगा कि अिस ध्येयकी सिद्धिके लिअे यह जरूरी है कि बड़े-बड़े औद्योगिक शहरों, अनेक अुद्योग-धन्धों और काफी तादादमें औद्योगिक पेढ़ियोंका विकेन्द्रीकरण किया जाय। अिसमें ध्येय अैसी सामाजिक अिकाअियां खड़ी करनेका होगा, जो खेती और अुद्योग दोनोंका साथ-साथ काम करेंगी और जिनका आकार अैसा होगा कि अुनका हर सदस्य अपने विचारों और कल्पनामें अुन्हें अपना सकेगा। अिसी तरह ज्यादातर अुद्योग छोटे पैमानेके होंगे, ताकि अुनका हरअेक मजदूर अुनके अुत्पादनमें भागीदार हो और अिस तरह अुनकी सफलताके लिअे अेक हद तक जिम्मेदार हो — जिसमें पैदा किये गये मालके दर्जे, डिजाअिन और अुपयोगिताको बढ़ानेके लिअे सुझाये जानेवाले विचारोंका भी समावेश होगा।

यह छोटी चीजोंके युगकी तरफ लौटना होगा, यद्यपि बड़ा महत्त्वपूर्ण नया ज्ञान प्राप्त करनेके बाद। अैसा होना जरूरी है, क्योंकि पिछली दो सदियोंकी लम्बी और कअी तरहसे खतरनाक यात्रामें हमें यह पता चल गया है कि जहां जिम्मेदारी और सर्जक अवसरका अधिक-से-अधिक बंटवारा होता है — अुदाहरणके लिअे, अुन समाजोंमें जहां सामाजिक, राजनीतिक और औद्योगिक अिकाअियां छोटी होती हैं — वहां मानवकी महत्ता अधिकसे अधिक प्रगट होती है और मनुष्यके व्यक्तित्वका अधिकसे अधिक विकास होता है।

दूसरे परिवर्तनोंके रूपमें हमें खेती और अुद्योग-धन्धोंका पुराना सम्बन्ध फिरसे कायम करना होगा और देशकी अन्न-अुत्पादनकी शक्तिके आधार पर अुसकी आबादीकी व्यवस्था करनी होगी। अितिहास जोरदार शब्दोंमें हमें यह सिखाता है कि सभ्यतायें अुस समय नष्ट होने लगती हैं, जब लोग भीड़-भड़क्केवाले शहरोंमें आकर अिकट्ठे हो जाते हैं। कुदरत, औद्योगिक जिम्मेदारी और सामाजिक सम्बन्धोंसे कटकर लोग पैसेकी भाषामें ही अपनी सम्पत्ति और कल्याणका मूल्य आंकने लगते हैं और अधिकाधिक चतुराअी और चालाकीके बल पर ही जीवन जीने लगते हैं।

समय पाकर नअी जुड़ी हुअी सामाजिक अिकाअियां प्रादेशिक विभागोंके रूपमें संगठित होंगी, और हर प्रदेशमें कुछ स्थानीय अिकाअियां रहेंगी। विभिन्न गांवोंमें आपसी सलाह-मशविरेसे अुद्योगोंका अैसा प्रबन्ध किया जायगा, जिससे हरअेक प्रादेशिक विभाग काफी हद तक स्वावलम्बी हो सके। स्थानीय और प्रादेशिक कौंसिलोंका तंत्र संयुक्त विभागके आर्थिक जीवन तथा जनसाधारणके स्वास्थ्य और कल्याण पर नियंत्रण रखेगा। अिस तरह समाजके आर्थिक जीवनसे अुसका राजनैतिक जीवन निर्माण होगा, और अैसा ही होना भी चाहिये। अिसके अलावा, नअी अर्थ-रचनाकी जरूरतें और गुणों पर आधारित सभ्यताकी मांगें पूरी करनेके लिअे नअी औद्योगिक पद्धतियोंका विकास होगा, जब कि अेक नअी शिक्षा-प्रणाली देशके नौजवानोंको अुन अधिक व्यापक सामाजिक और आध्यात्मिक मूल्यों और दृष्टिकोणोंसे परिचित करायेगी, जिन्हें मनुष्य प्राप्त कर सकता है, और अुन्हें सर्जक जीवनकी अधिक व्यापक स्वतंत्रतायें प्राप्त करनेकी तैयारीमें मदद पहुंचायेगी।

अिन हालतोंमें और अिस दिशामें काम करनेसे लोग सर्जक धन्धोंमें, औद्योगिक और नागरिक जिम्मेदारियोंमें अधिकाधिक सच्चा सन्तोष अनुभव करेंगे, जबकि अच्छेसे अच्छे साधन खड़े करके सामाजिक और दूसरे औद्योगिक ध्येय सिद्ध करनेमें अुनका अुपयोग करनेकी आदतसे मानवी प्रवृत्तिके हर क्षेत्रमें काम लिया जायगा। अिससे संपूर्ण जीवन अुद्देश्यपूर्ण और महत्त्वपूर्ण बनेगा। लोग कम चीजों और कम बरबादीसे आजसे कहीं ज्यादा सादी लेकिन बेहतर जिन्दगी बितायेंगे।

अिस तरह औद्योगिक क्रांतिके मार्गमें बिछे हुअे संकटोंसे हम बच जायेंगे, जबकि सर्जक कार्योंमें लगनेके कारण महान आध्यात्मिक शक्ति और धैर्यवाले समाज निर्माण होंगे। अितनी ही महत्त्वकी बात यह भी है कि अिससे अेक अैसा राष्ट्र खड़ा होगा, जो सारे संसारकी मैत्री, आदर और सद्भावना प्राप्त कर सकेगा; और यह अेक अैसी आध्यात्मिक सुरक्षा होगी, जो किसी भी तरहकी सैनिक सुरक्षासे कहीं ज्यादा समर्थ और शक्तिशाली होगी।

विल्फ्रड वेलॉक

('दि सोअर' १९५२ के ग्रीष्मकालीन अंकसे अुद्धृत)

स्मरण-यात्रा

[बचपनके कुछ संस्मरण]

काका कालेलकर

कीमत ३-८-० डाकखर्च ०-११-०

हिमालयकी यात्रा

काका कालेलकर

कीमत २-०-० डाकखर्च ०-८-०

अुस पारके पड़ोसी

[पूर्व अफ्रीकाके प्रवासका रोचक वर्णन]

काका कालेलकर

कीमत ३-८-० डाकखर्च ०-१०-०

बापूकी झांकियां

[पुनर्मुद्रण]

काका कालेलकर

कीमत १-०-० डाकखर्च ०-५-०

नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद - ९

www.vinoba.in

हरिजनसेवक

३० मअी १९५३

हमें नअी आर्थिक नीति चाहिये

भारत-सरकारने आजकल जो आर्थिक नीति अपनाअी है, अुसके विषयमें श्री म० प्र० ति० आचार्य लिखते हैं:

"पंडित नेहरू मार्क्सवादियों और पूंजीवादियोंकी तरह यह मानते लगते हैं कि सम्पत्तिके अुत्पादनका खपतके लिअे अपने-आप बंटवारा हो जाता है, जब कि पैसा मालके बंटवारे, खपत और अुत्पादनको भी रोकता है। आज हमारे यहां चलनके लिअे ही काफी पैसा नहीं है, बल्कि सारी चीजें पैदा करनेके लिअे भी काफी पैसा है। यह शून्यमें विचार करना है — वस्तुस्थितिसे अिसका कोअी सम्बन्ध नहीं है। अगर मौजूदा आर्थिक तंत्रमें मालकी खपतको बढ़ाया जा सके, तो पश्चिम या पूर्वमें न तो कोअी दुःख-दर्द रहेगा और न समाजवादी, साम्यवादी या दूसरे कोअी विध्वंसक आन्दोलन होंगे। आगे बढ़े हुअे देश भी अिस समस्याको हल नहीं कर सकते। पंडित नेहरू आज वहांसे आरम्भ कर रहे हैं, जहांसे युरोपने ५० बरस पहले आरम्भ किया था। अुस समय बाहरके बाजारोंमें मालकी बिक्रीकी आजसे ज्यादा संभावनायें थीं, जिसकी वजहसे अिंग्लैंड, जर्मनी और अमेरिका अपने अुद्योगोंका विकास और वृद्धि कर सके। आज देशके भीतर और बाहर भी बाजार नष्ट हो गये हैं, और दिनोंदिन ज्यादा नष्ट होते जायंगे।

"जब तक हम यह नहीं समझ लेते कि पूंजीवादी और बोल्शेविक अर्थ-रचनासे हमारा काम नहीं चलेगा, तब तक अिस समस्याका कोअी हल नहीं मिलेगा। लेकिन हमारी सरकार पूंजीवादी और बोल्शेविक अर्थ-रचनाकी बुरी-से-बुरी बातोंको मिलानेका प्रयत्न करके देशकी आर्थिक समस्या हल करना चाहती है, जिससे स्थिति और ज्यादा बिगड़ रही है। बेकार चीजोंके बढ़े हुअे अुत्पादनके बावजूद दोनों अर्थ-रचनायें खपतको घटानेवाली हैं।"

अिसमें कही हुअी बातोंको देखते हुअे यह कोअी नअी टीका नहीं है। लेकिन सरकारकी मौजूदा आर्थिक नीतिके संदर्भमें वह महत्त्व ग्रहण कर लेती है। अिसमें कुछ अैसे अत्यन्त महत्त्वपूर्ण प्रश्न समाये हुअे हैं, जिनकी अपनी आजकी स्थितिमें हम अुपेक्षा नहीं कर सकते। वे प्रश्न हैं:

१. क्या हमारे लिअे आज औद्योगीकरणमें, जिसका विकास पश्चिमने औपनिवेशिक या साम्राज्यवादी अर्थ-रचनाके प्रभुत्ववाली पिछली सदीमें किया, पश्चिमके रास्ते जाना समझदारीका काम होगा, या अैसा करनेसे हमें सचमुच कोअी लाभ होगा?

२. क्या हम यह समझते हैं कि आजकी विश्व-राजनीतिमें अुपनिवेशोंके या विदेशी बाजार दिनोंदिन नष्ट हो रहे हैं और स्वावलम्बन आज राष्ट्रोंकी आर्थिक नीतिकी कुंजी होना चाहिये?

३. क्या हमने यह महसूस किया है कि किसी भी कीमत पर केवल अुत्पादन बढ़ाने पर जोर देनेसे हमारी आर्थिक समस्या हल नहीं हो सकती? अिसके बजाय क्या हमारी समझमें यह बात आअी है कि हमें अपनी राष्ट्रीय अर्थ-रचनाके लिअे नअी नीति बनानी चाहिये, जिसका आधार कुदरती तौर पर अुत्पादनके बंटवारेकी अैसी पद्धति पर हो, जो दूषित पूंजीवादी केन्द्रीकरणको जन्म देनेके बजाय ज्यादासे ज्यादा लोगोंके हाथोंमें और बड़े-से-बड़े भागमें क्रयशक्तिको बांट सके?

४. क्या हम यह मानते हैं कि बेकारीकी समस्या हल करनेमें, जो दूसरे शब्दोंमें हमारे तमाम देशवासियोंको अन्न, वस्त्र और आसरा देनेकी बुनियादी समस्या है, अेक ही स्थानमें केन्द्रित अुत्पादनका रास्ता असफल रहा है? क्या हम यह स्वीकार करते हैं कि गांधीजीने खादी और ग्रामोद्योगोंकी अर्थ-रचनाके जरिये हमें जो रास्ता दिखानेका प्रयत्न किया, वही अिस समस्याको हल कर सकता है?

यह आज न सिर्फ हमारा, बल्कि सारी दुनियाका सबसे मुख्य प्रश्न बन गया है। बाजार दिनोंदिन घट रहे या नष्ट हो रहे हैं, अिसलिअे या तो हथियारोंसे लैस राष्ट्रोंको बाजारोंके लिअे आपसमें लड़ मरना होगा या फिर अुन्हें शांति और सन्तोषकी नअी अर्थ-रचनाका वह रास्ता ग्रहण करना होगा, जो गांधीजी दुनियाको बता गये हैं। अुदाहरणके लिअे, अिंग्लैंडके मूलभूत आर्थिक और सामाजिक प्रश्नोंका विचार करनेवाले लोगोंके अेक छोटेसे दलका प्रतिनिधित्व करनेवाले 'दि सोअर' नामक त्रैमासिक पत्रके संपादक अुसके ग्रीष्मकालीन अंक (१९५२) में ब्रिटिश अर्थ-रचनाके बारेमें लिखते हैं:

"हमारी ब्रिटिश अर्थ-रचना अपने मौजूदा आधार पर ज्यादा समय तक टिक नहीं सकती। चूंकि युद्धके पहले कच्चा माल पैदा करनेवाले देश अब बड़ी तेजीसे स्वावलम्बनकी ओर बढ़ रहे हैं, ब्रिटेनके लिअे भी अुसी दिशामें बढ़ना अनिवार्य हो गया है। कपड़ेके व्यापारकी मौजूदा हालत अिस बातकी स्पष्ट चेतावनी है। तेजीसे विकसित हो रही नअी विश्व-व्यवस्थामें ब्रिटेन अन्न और कच्चे मालके आयातकी भारी मांगवाली अपनी मौजूदा अर्थ-रचनाको टिकाये रखनेके लिअे जरूरी बाजार नहीं पा सकेगा।

"ज्यों-ज्यों आजकी युद्धको जन्म देनेवाली अर्थ-रचना टूटेगी और बेकारी बढ़ेगी, त्यों-त्यों सरकार स्थानीय स्वावलम्बनको बढ़ानेके हर प्रयत्नमें मदद देकर खुश ही होगी; और दस्तकारियों, गृह-अुद्योगों, छोटे अुद्योगों तथा खेती व अुद्योगों पर आधारित स्थानीय अर्थ-रचनाका विकास होनेसे स्थानीय प्रतिभा, स्थानीय सहयोग और स्थानीय स्वायत्त-शासनके विकासको अुत्तेजन मिलेगा, जो बदलेमें व्यक्तिगत जिम्मेदारीके स्तर और विस्तारको बढ़ायेगा और अिस तरह सच्चे आर्थिक और आध्यात्मिक लोकतंत्रकी नींव डालेगा।"

अुस दलके अेक सदस्य श्री विल्फ्रेड वेलॉकने 'दि सोअर' के अुसी अंकमें ब्रिटेनके पुनर्निर्माणके अिस केन्द्रीय प्रश्न पर 'विकेन्द्रीकरण' नामसे अेक लेख लिखा है। वह लेख अिसी अंकमें अन्यत्र अुद्धृत किया गया है। आज जब हम अपने राष्ट्रके पुनर्निर्माणका जी-तोड़ प्रयत्न कर रहे हैं, तब हमें अपनी स्थितिके बुनियादी सत्योंको न भूलनेका ध्यान रखना चाहिये; क्योंकि दिखावटी चमक और लुभावनी तड़क-भड़कवाले पश्चिमके औद्योगीकरणके पुराने रास्ते पर चलनेकी अुतावलीमें अिस बातका बड़ा डर है कि हम अुन सत्योंको भूल जायं।

८-५-'५३ (अंग्रेजीसे)

मगनभाअी देसाअी

गांधी और साम्यवाद

[श्री विनोबाकी भूमिकाके साथ]

लेखक: किशोरलाल मशरूवाला

कीमत १-४-० डाकखर्च ०-५-०

नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद - ९

www.vinoba.in

भूदान-यज्ञके लिअे हमारा तात्कालिक कार्यक्रम

[चांडिल सर्वोदय-सम्मेलनमें ता० ९-३-'५३ को दिये गये विनोबाजीके सुबहके भाषणका बचा हुआ भाग।]

भूदानका अीश्वरीय संकेत

अब दूसरी बात यह कि हमारे संघके लिअे व्यूह-रचना कैसी होनी चाहिये। यह काम करीब-करीब दो साल हुअे तेलंगानामें आरंभ हुआ। जिस गांवमें यह आरम्भ हुआ, अुस गांवके भाअी अिस सम्मेलनमें मौजूद हैं। पहले दिन अुन्होंने हमें दान दिया। अस्सी अेकड़ जमीन हरिजनोंने मांगी और अुन्होंने सौ अेकड़ जमीन दी। वे भाअी यहां हैं। अुनसे आप मिलकर बात कर सकते हैं कि अुनके गांवके वातावरणमें किस तरह यह बात पैदा हुअी। अुस रोज अीश्वरका मैंने अेक अिशारा पाया और मनमें सोचा कि अब मुझे क्या करना चाहिये। अगर अीश्वरका अैसा अिशारा न पाकर स्वतंत्र बुद्धिसे मैं सोचता, तो भूमिका दान मांगकर भूमिका मसला हल करनेकी बात मुझे सूझनेवाली नहीं थी। हां, मंदिर, मस्जिद, मठ अित्यादिके लिअे सौ, डेढ़ सौ, पांच सौ, हजार अेकड़ तकका दान मिल सकता है और लोगोंने पहले हासिल भी किया है। हम भी अगर चाहते, तो हासिल कर सकते थे। लेकिन भूमिका मसला हल करनेका मतलब करोड़ों अेकड़ होता है और अुतनी भूमि लोगोंकी सद्बुद्धि जाग्रत करके प्राप्त करनेकी हिम्मत स्वतंत्र रीतिसे मुझमें नहीं थी। लेकिन जब वह अिशारा हुआ, तब मैंने सोचा कि कार्य तो मेरी बुद्धिसे बहुत ही कठिन लगता है, फिर भी अितना अिशारा मिलने पर मैं अिसको हाथमें न लूं तो अहिंसा डरपोक साबित होगी और वह काम नहीं करेगी। अिसलिअे यद्यपि यह कार्य कठिन है, फिर भी अीश्वर पर भरोसा रखकर मुझे वह हाथमें लेना चाहिये। अुस वक्त मैंने अपने साथियोंसे कोअी सलाह-मशविरा नहीं किया था; क्योंकि अगर मैं सलाह-मशविरा करता तो यह प्रोग्राम अुठा लो, अैसी सलाह कोअी भी मुझे देनेवाले नहीं थे। यही कहते कि यह बात होनेवाली नहीं है। अगर किसी अेकाध गांवमें संयोगवश हो गयी, तो दूसरी बात है। लेकिन सारे देशके लिअे अिस तरहका प्रोग्राम व्यवहार्य नहीं है, अैसा ही अभिप्राय अुन लोगोंका होता, जो मेरे नजदीकसे नजदीक थे। मेरा भी अैसा ही अभिप्राय होता, अगर अीश्वरका जो अिशारा मुझे मिला, वह नहीं मिला होता और दूसरे किसीको मिला होता और वह मुझे पूछता, तो मैं भी अुसे यही कहता कि भाअी, अेक गांवमें अेक बात बनी है। लेकिन अुस परसे हम कोअी प्रोग्राम निश्चित नहीं कर सकते, मनमें संकल्प नहीं कर सकते। अिसलिअे मैंने किसीसे सलाह-मशविरा करना अुचित और लाभदायी नहीं माना। बल्कि नसीब आजमानेका सोचा और अीश्वर पर भरोसा रखकर मांगना शुरू कर दिया। तो मांगते हुअे अुसके आगे, पीछे, अूपर, नीचे, कौन-कौनसे भाव पड़े हैं, अुसका रोज-ब-रोज मुझे नया-नया दर्शन मिलता गया और अुन दिनोंके पचासों व्याख्यान आप पढ़ेंगे, तो हर व्याख्यानमें कोअी-न-कोअी नयी चीज पायेंगे। तो यह विषय अैसा अुत्तरोत्तर स्पष्ट होता गया। जमीन मिलती गअी और तेलंगानामें अेक दर्शन हुआ। फिर भी मनमें अेक शंका थी, और वह स्वाभाविक थी। मेरे मनमें अुतनी नहीं थी, लेकिन दूसरोंके मनमें काफी थी। तेलंगानामें अेक पृष्ठभूमि थी, जिसके कारण यह बात बनी। शायद देशके दूसरे हिस्सोंमें वैसा न भी बने। जब दिल्ली जानेका मौका आया, और पं० नेहरूका निमंत्रण तो था फौरन आनेका, तो फौरन निकलना कबूल किया। लेकिन अपने ढंगसे पैदल चलकर जानेका सोचा। रास्तेमें यह बात मैं लोगोंको समझाता गया। नतीजा अुसका यह हुआ कि दिल्ली तक लोगोंने अुतना ही अुत्साह बताया, जितना कि तेलंगानामें दीख पड़ा। अुससे अेक बात स्पष्ट हुअी कि तेलंगानाकी यह कोअी खास बात नहीं है, बल्कि अिस जमानेकी ही यह बात है। यानी काल-प्रवाह अिसके अनुकूल है। तब तक जो जमीन मिलती गयी, वह हम लेते गये। पर जहां अुत्तर प्रदेशमें घूमनेकी बात आयी, वहां मैंने अेक कोटा मुकर्रर किया और अुसका संकल्प बनाया। वह छोटा-सा था, लेकिन अुसको सामने रखकर काम शुरू किया। अुत्तर प्रदेशके साथियोंने, जो संख्यामें कम थे, बहुत बहादुरीसे काम किया और सतत दस महीने आगे-पीछे दौड़े। अुनमें से कुछ विशेष काममें लगे रहे। अुनके सहयोगसे दिखा कि संकल्प सिद्ध हो सकता है। और आज अुन लोगोंने सम्मेलनमें जाहिर किया कि वह संकल्प करीब-करीब पूरा हो चुका। पांच लाख अेकड़ करना था। पौने पांच लाख हो चुके, पच्चीस हजार वे कर सकते हैं। अितना ही नहीं, बल्कि अगले साल कुल मिलाकर ग्यारह लाख अेकड़ जमा करनेका भी निश्चय कर लिया। यहां भी वह जाहिर किया है और अुन लोगोंने आपसमें बैठकर गंभीरतापूर्वक अीश्वर-स्मरणके साथ मन-हीं-मन संकल्प भी कर लिया।

बिहारकी भू-समस्या हल करनेका निश्चय

यह तो अुत्तर प्रदेशमें हुआ। अुसके बाद मेरे मनमें आया कि अगर मैं अिस तरह हिन्दुस्तानमें घूमा करूं, तो हर साल दो-तीन लाख अेकड़ जमीन मुझे मिल सकती है। पूरा हिन्दुस्तान घूमनेमें पांच-छः साल लगेंगे, तो दस-बीस लाख अेकड़ जमीन हो सकती है। लेकिन अुतने से समस्या हल नहीं होगी। और अेक निश्चित मुद्दतमें वह समस्या हम हल नहीं करते हैं, तो जमानेकी रफ्तार पहले जैसी नहीं है, तेज है। अगर अिस तरहका प्रोग्राम सौ साल तक चलानेका कहेंगे, तो वह ठीक नहीं होगा। लोकोपकारका साधन तो वह बनेगा, लेकिन समाज-रचना बदलनेका साधन नहीं बनेगा। अिसलिअे कहीं तो मसलेके हलकी ही चेष्टा करनी चाहिये। तो मुझे लगा कि बिहार अैसा प्रान्त है, जो बहुत बड़ा भी नहीं, छोटा भी नहीं और जहां कुछ सद्भावनाके अंश हैं — मैं नहीं कहता कि दूसरे प्रदेशोंसे कुछ ज्यादा होंगे, लेकिन कम भी नहीं होंगे। और मेरी श्रद्धा कहती थी कि बुद्ध भगवानने जहांसे सारी दुनियाको अहिंसाका सन्देश दिया, अुस भूमिमें अहिंसाके लिअे विशेष अनुकूलता होगी। अिसलिअे बिहारका काम हाथमें लिया जाय और निश्चय किया जाय कि यहांका मसला हल करकें ही आगे बढ़ा जायगा। और बिहारमें जिस रोज प्रवेश किया, अुस रोज यह निश्चय जाहिर भी कर दिया।

बिहारका प्रारम्भिक अनुभव

लेकिन बिहारमें प्रवेश करने पर दूसरा ही अनुभव आया और चट्टान-सी लगी। तो मैंने सोचा कि जहां चट्टान लगती है, वहां मेहनत ज्यादा करनी पड़ती है। जब हम अुस चट्टानको तोड़ते हैं, तो नीचे पानीका बहुत सुन्दर चश्मा बहता मिलता है। चट्टानके नीचेसे जो पानी आता है, वह बहुत साफ और स्वच्छ होता है। अिसलिअे मेहनत तो करनी पड़ेगी, लेकिन अपना काम अिस प्रान्तमें बहुत निर्मल होगा। अिस तरह "अस्तीत्येव अुपलब्धव्य" अुपनिषद्में हमें यही समझाया है कि होनेवाला है, "अस्ति", "नास्ति" की भाषा मत बोलो। तो मेरे मनमें कभी यह नहीं आया कि मैंने यहां संकल्प तो किया, लेकिन मुश्किल मामला दीखता है। तथापि दो महीने अैसे गये, जब कि बहुत कम दान मिला। और सारे हिन्दुस्तान पर यह असर हुआ कि बिहारमें मामला बहुत कठिन है। क्योंकि अुत्तर प्रदेशमें आखिरमें कामकी गति बहुत बढ़ गअी थी। वही रफ्तार बिहारमें भी आगे रहेगी, अितना ही नहीं, बल्कि और तेज होगी, अैसी अपेक्षा थी। पर

www.vinoba.in

वैसा नहीं हुआ। और सारण जिलेमें बावजूद अिसके कि अुस जिलेके नागरिक हमारे राष्ट्रपति हैं और अुन्होंने अपने हस्ताक्षरसे पत्रक निकाला था कि 'अिस कामको बिहारमें बढ़ावा दिया जाय, खास करके सारण जिलेमें विशेष प्रगति होनी चाहिये' और हजारोंकी तादादमें अुस पत्रककी प्रतियां बांटी गयीं, हमको वहां पर पंद्रह दिनमें मुश्किलसे अेक हजार अेकड़ जमीन मिली। और कुछ दिन तो अैसे भी गये, जब दो अेकड़ जमीन मिली। तो जिस रोज दो या तीन अेकड़ जमीन मिली, अुस दिन मैंने कार्यकर्ताओंको कुछ डांटा और अुन्होंने कुछ रफ्तार बढ़ायी। अिस तरहके अनुभव आरम्भमें आये।

बुद्ध भगवानकी तपस्या-भूमिमें अेक लाखका संकल्प

अैसा अनुभव होते हुअे भी जहां मैंने गया जिलेमें प्रवेश किया, वह देहात छोटा-सा था। रातको मुझे अकसर सोने पर फौरन नींद आती है, लेकिन अुस रोज नींद आ तो गअी जल्दी, लेकिन अुड़ भी गअी जल्दी। और मैं सोचने लगा। करीब अेक बजा होगा। मुझे सूझा कि गया जिलेमें प्रवेश हुआ है, यह तो बुद्ध भगवानकी तपस्याका जिला है; अलावा अिसके करोड़ों हिन्दू यहां श्राद्धके लिअे आते हैं तो यह श्रद्धाका स्थान है। श्राद्धका मतलब ही यह होता है कि श्रद्धाका स्थान। तो सारे हिन्दूधर्मके श्रद्धाका यह स्थान है और बुद्ध धर्मके अुगमका स्थान है, यह कोअी छोटी बात नहीं है। अिसलिअे यहां पहली किस्तके तौर पर अेक लाख अेकड़का संकल्प करो। और सुबह अुठनेके बाद जो दो-चार साथी थे अुनके सामने जब हम गांवमें पहुंचे, तब यह बात रखी और अुन्होंने अुसको अुठा लिया। अब तक जो काम हुआ वह जाहिर है। चार लाखका कोटा तय किया गया। यहांके कांग्रेसवालोंने अुसको अुठा लिया। अिस पर भी टीका की जाती है। लोग कहते हैं कि अब भूदान किधर चला? कांग्रेसवालोंने अिसको हथियाया यानी बदमाशोंके हाथमें अब यह हलचल चली गयी। स्पष्ट शब्दोंमें अिस तरह जब हम दूसरोंके बारेमें सोचने लगते हैं, तो हम अहिंसाको नहीं समझते। हममें तो अैसी ताकत होनी चाहिये कि जिस किसीने हमारा हाथ पकड़ा, अुसको हमने अपने कब्जेमें कर लिया।

अेक प्रान्तमें मसला हल करें

अब मेरे मनमें आया है, जिसको मैं व्यूह-रचना कहता हूं, कि बिहारमें अधिक-से-अधिक शक्ति लगाअी जाय और अुसमें भी अेक-दो जिलोंमें ही पूर्ण शक्ति लगाअी जाय, ताकि अुन जिलोंका मसला हल हो। तो गया या और किसी जिलेमें तीन लाख अेकड़ जमीन मिल जाती है और बिना कानूनके जमीनका बंटवारा हो जाता है — अर्थात् अुसमें सरकारी मदद आयेगी, कानूनकी नहीं; बल्कि सरकारके पास जो जमीन पड़ी है, वह भी लेनेकी बात आयेगी। क्योंकि जहां सारे प्रान्तमें दो लाखकी बात करते हैं, वहां सरकारी जमीनका कोअी सवाल नहीं, लेकिन जहां सारे प्रान्तकी भूमिकी समस्या हल करनेकी बात होती है, बत्तीस लाख, चालीस लाख, अेक करोड़की भाषा शुरू होती है, वहां सरकारी जमीन अवश्य लेनी है। लेकिन वह आखिरमें लेनी है, आरंभमें नहीं — और कुल मिलाकर सबके सहयोगसे सही, अेक जिलेमें बिना कानूनके यानी बिना दंडशक्तिके पूरा काम होता है, तो कोअी वजह नहीं कि हिन्दुस्तानके दूसरे हिस्सेमें वैसा न हो। तो मेरी दृष्टि यही रही कि अैसा कोअी नमूना हमें पेश करना चाहिये, जिसका परिणाम सारे भारत पर हो। अुससे निष्ठा बढ़ेगी, विश्वास पैदा होगा कि यह कार्यक्रम सिद्ध हो सकेगा। अेक दफा विश्वास पैदा हो गया कि सारे कार्यकर्ता अुसमें जुट जायेंगे और मसला हल होनेमें देर नहीं लगेगी, यह मैंने सोचा।

पहली मांग : "सर्व धर्मान् परित्यज्य..."

अतः अभी आप लोगोंसे मेरी मांग है कि अपने-अपने प्रांतमें जाकर अेक साल तक अपना पूरा समय अिसमें दीजिये, बाकीकी सब वस्तु छोड़ कर दीजिये, सब अच्छी-अच्छी वस्तु छोड़कर भी दीजिये। यह मैं कोअी नअी बात नहीं बता रहा हूं। भक्तिमार्गमें यह आदेश दिया है कि आपको अधर्मको तो छोड़ना ही पड़ता है, धर्मको भी छोड़ना पड़ता है। "सर्व धर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज" — सब धर्मोंको छोड़कर मेरी शरणमें आ जा — यह है भक्तिमार्ग। जहां हम भक्तिकी बात करते हैं, वहां छोटे-छोटे धर्मोंकी अगर गुंजाअिश रखते हैं, तो हम निष्ठावान नहीं हो सकते और हमारी भक्ति सफल नहीं हो सकती। यह भक्तिमार्गकी विशेषता है कि अुसमें सब धर्मोंका त्याग करना पड़ता है। और यह जो अपना मार्ग है, वह भक्ति मार्ग है; क्योंकि अगर हम सारे समाजको अेकरस बनाना चाहते हैं, तो यह भक्तिके सिवा हो नहीं सकता। प्रेमभाव पैदा करना चाहते हैं, तो वही हमारा मुख्य धर्म है और बाकीके छोटे-छोटे काम और छोटे-छोटे धर्म, जो हमने मान लिये, वे अिस भक्तिके लिअे छोड़ देने पड़ते हैं। अिसलिअे आप लोग सब धर्मोंका त्याग करें और अिस काममें लग जायं, यह मेरी पहली मांग है।

दूसरी मांग : बिहारके लिअे समय दें

दूसरी बात यह है कि आपके प्रान्तमें जो लोग काम करेंगे, वे तो करेंगे ही; लेकिन भिन्न-भिन्न प्रान्तोंके भी कुछ लोग अगर बिहारके लिअे थोड़े दिन, दो-चार महीने दें, तो अच्छा होगा। अुसमें दो लाभ होंगे। अेक तो बिहारमें आज दूषित वातावरण है यानी पक्षभेद है। मैं कोशिश कर रहा हूं कि वह पक्षभेद मिटे। वह भगवानकी कृपासे ही मिटेगा, अितना गहरा है। और अुसके मूलमें कुछ नहीं है, बच्चोंके जैसी बात है। कोअी कल्पना-भेद या विचार-भेद भी नहीं है। पर वह है अिसीलिअे बाहरके जो लोग यहां होंगे, अुनके तटस्थ होनेके कारण अुनकी अिसमें बहुत मदद होगी। अलावा अिसके, अिस काममें अुनको कुछ तालीम मिलेगी। यहां कुछ वातावरण है, अिसलिअे अैसे वातावरणमें काम किस तरह करना, अिसका थोड़ा शिक्षण मिलेगा। अुनके प्रान्तमें जब वे जायंगे, तो अिस शिक्षणका अुनको लाभ मिलेगा। मैं यह नहीं चाहूंगा कि अपनी जगहका काम क्षीण करके लोग यहां आयें। लेकिन थोड़ी संख्यामें दो-चार भाअी, अेक-अेक प्रान्तके छोटे-छोटे कार्यकर्ता, बिहारके लिअे समय दें तो अच्छा होगा। यह मेरी दूसरी मांग है।

तीसरी मांग : बिहारी लोग अेक जिला पूरा करें

तीसरी मांग बिहारवालोंसे ही है। वे अेक-दो जिले निश्चित करें और अुनमें अपनी अधिक ताकत लगायें और बाकी बची ताकत दूसरी जगह खर्च करें। अगर वे यह करेंगे और दो-तीन महीनेके अंदर अेकाध जिला पूरा करेंगे, तो मुझे बहुत ही आनंद होगा। लोग मुझे पूछते हैं कि अगर आप बिहार प्रान्तमें ही गिरफ्तार रहे और दूसरे प्रान्तमें न आ सके, तो क्या वह भूदानके कामके हितमें होगा? अिस तरहका व्यूह ठीक होगा क्या? मेरा अुत्तर यह है कि वही ठीक होगा। और वही ठीक होगा, क्योंकि अुससे परिणाम यह होगा कि किसी अेक जगह पर कुछ निश्चित मुद्दतमें हम कार्यक्रम पूरा कर सकेंगे। फिर तो सिर्फ गणितका ही सवाल रह जाता है कि अगर अितने-अितने कार्यकर्ता मिल जाते हैं, तो अितने दिनोंमें हम सारे हिन्दुस्तानका काम पूरा कर सकते हैं। अगर अुतने कार्यकर्ता नहीं मिलते हैं, तो काम नहीं पूरा होगा, यह दूसरी बात है। लेकिन कार्यकर्ता मिलते हैं, तो काम

www.vinoba.in

पूरा हो सकता है। अिस तरहका दर्शन होगा, जिसकी अिस वक्त मैं बहुत जरूरत मानता हूं।

अगले साल अन्य प्रान्तमें जाना चाहूंगा

यद्यपि मैंने बिहारवालोंको कह दिया है कि जब तक यहांका काम पूरा नहीं होता ह, तब तक मुझे यहीं रहना है। वैसे मैं चाहता यह हूं कि अगला सम्मेलन अिस प्रान्तमें न हो, किसी दूसरे प्रान्तमें हो। आजकल हालत अैसी है कि जहां मैं रहता हूं, वहां संमेलन करनेकी जरूरत होती है। तो अिस प्रान्तका कार्यक्रम पूरा करके अिस प्रान्तके लोग अगले सम्मेलनके लिअे मुझे किसी दूसरे प्रान्तमें भेजेंगे अर्थात् यह बत्तीस लाख करनेकी जो बात है, वह अेक सालके अंदर पूरी करनेमें हम लोग लग जायं तो बहुत अच्छा होगा।

दूसरे प्रांतवाले काम न करें तो?

अब जाहिर है कि हमने पच्चीस लाखका अगले साल तक संकल्प किया। अिसलिअे अगर बिहारमें ही हमने बत्तीस लाख अेकड़ पूरे कर लिये, तो हमारे संकल्पमें कमी तो नहीं रहेगी। अगर यह व्यूह असफल रहा, तो दूसरी बात है। लेकिन अगर सफल रहा, तो कोअी बाधा अुसमें नहीं होगी और देखते-देखते दूसरे प्रान्तोंमें क्रान्ति हो जायगी, कुछ ज्यादा करना भी नहीं पड़ेगा। अेक भाअीने कहा कि बिहारमें काम होने पर भी, जितनी जमीन आप चाहते हैं अुतनी मिलने पर भी, अगर दूसरे प्रान्तमें लोग कुछ न करें तो वहां क्या होगा? तो मैंने कहा कि आपका यह सवाल मानस-शास्त्रके विरुद्ध है। मानस-शास्त्र अिस तरह काम नहीं करता। लेकिन घड़ी भर कल्पना करो कि दूसरे प्रान्तमें कुछ नहीं हुआ, तो वहां दो-तीन चीजें बनेंगी। अेक तो यह होगा कि अुस प्रान्तके लोग बगावत करेंगे या यह होगा कि वहांकी सरकार बिहारका मसला हल होते देखकर कानून बनायेगी। तो या तो कानूनसे काम होगा या बगावत होगी, यानी राज्यक्रांति होगी। लेकिन अितनी बड़ी घटना अेक प्रान्तमें हो और अुसका कोअी परिणाम दूसरे प्रान्त पर न हो, अितना छिन्न-विछिन्न मानव-समाज नहीं है। बल्कि मानव-समाजमें अेक जगहकी अनुभूति दूसरी जगह पहुंचती है। और संवेदनाकी क्षमता अिस वक्त काफी अच्छी है। हिन्दुस्तानमें भी और बाहरके देशोंमें भी। तो अैसी कल्पना करनेकी जरूरत नहीं है, यह मैंने कल कहा था। यह मैंने आप लोगोंके सामने मेरा व्यूह रखा है और मेरी जो मांगें हैं, वह भी आपके सामने रखी हैं।

अब जो तीसरा विषय है, अुसकी चर्चा मैं शामको प्रार्थनामें करूंगा। अभी तो समाप्त करता हूं।

अेक धर्मयुद्ध

[अहमदाबादके मिल-मजदूरोंकी लड़ाअीका अितिहास]

महादेव देसाअी

कीमत ०–१२–० डाकखर्च ०–५–०

गांधीजीकी संक्षिप्त आत्मकथा

संक्षेपकार : **मथुरादास त्रिकमजी**

कीमत १–८–० डाकखर्च ०–८–०

बापूके पत्र—२

सरदार वल्लभभाअीके नाम

संपादिका : **मणिबहन पटेल**

कीमत ३–८–० डाकखर्च ०–११–०

नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद–९

हमारी महान विरासत

[डॉ० सुशीला नय्यर द्वारा २–१२–'५२ को आगरा विश्वविद्यालयके विद्यार्थियोंके सामने दिये गये गांधी-स्मारक भाषणकी पांचवीं और आखिरी किस्त।]

५

गांधीजीका विश्वास था कि अहिंसा व्यक्ति, दल या राष्ट्रकी सारी समस्यायें हल कर सकती है—भले अुनका स्वरूप राजनीतिक अन्यायका हो, सामाजिक अन्यायका हो या आर्थिक अन्यायका। राजनीतिक और सामाजिक क्षेत्रोंकी समस्यायें हल करनेमें अुन्हें जो सफलता मिली, अुसका जिक्र मैं पहले ही कर चुकी हूं। अब दो शब्द अुनकी आर्थिक समस्याओंको हल करनेकी पद्धतिके बारेमें। अेक सच्चे व्यवसायीकी तरह वे लाखों आदमियोंके छोटे-छोटे कामोंको कुछ लोगोंके बड़े कामोंसे ज्यादा महत्त्व देते थे। यही दृष्टि चरखे और ग्रामोद्योगों ारा देशके आर्थिक पुनर्निर्माणके अुनके सिद्धान्तकी आधार-शिला रही है। अिस पद्धतिके अनुसार अेक आदमीके प्रति घंटेके अुत्पादनका हिसाब लगाया जाय तो वह बहुत मामूली दिखाअी देगा, लेकिन जब अुसे लाखोंसे गुणा किया जायगा, तो अुसका परिणाम आश्चर्यजनक आयेगा। जिस देशमें विराट मानव-शक्तिके साथ-साथ लोगोंमें भयंकर बेकारी हो, अुसके लिअे गांधीजीके बताये हुअे हलके सिवाय दूसरा कोअी हल हो ही नहीं सकता। निष्णात अर्थशास्त्रियोंने भी यह बात स्वीकार की है कि अन्तरिम अुपायके नाते गृह-अुद्योग जरू ी हैं। गांधीजीकी दृष्टि अिससे भी आगे बढ़ी अी थी। क्या खूब विकसित यंत्रोद्योगोंवाला भारत अपने अतिरिक्त मालके लिअे दूसरे राष्ट्रोंके बाजारों पर अधिकार करनेकी कोशिश करके अुनका अुसी तरह शोषण करेगा, जिस तरह खुद अुसका शोषण किया गया है? यह विचार अुन्हें बिलकुल पसन्द नहीं था। वे भारतसे यह आशा रखते थे कि वह अहिंसाके जरिये सारी दुनियामें हर तरहके शोषणका अन्त करनेका रास्ता दिखायेगा। चरखे और गृह-अुद्योगोंको लोकप्रिय बनानेका प्रयत्न करके वे रक्तहीन आर्थिक क्रान्तिकी नींव डाल रहे थे। वे चाहते थे कि गांवके कारीगर कुदरतके बीच रहकर आसानीसे मिलनेवाले सादे आरामकी जिन्दगी बितावें और व्यक्तिगत स्वतन्त्रताका भी अुपभोग करें; अुन्हें यह पसन्द नहीं था कि ये कारीगर शहरी सुख-सुविधायें खरीदनेके मोहमें पड़कर बड़े पैमाने पर माल पैदा करनेवाले मिलों और कारखानोंके मजदूर बनें, जहां पूंजीवादी या साम्यवादी किसी भी व्यवस्थामें मजदूरोंको व्यक्तिगत स्वातन्त्र्यकी बलि देकर गुलामोंकी जिन्दगी बसर करनी पड़ती है। अिसके अलावा, वे बुनियादी जरूरतोंके बारेमें ादेशिक स्वावलम्बन चाहते थे, ताकि आम लोग पूंजीपतियों और राज्यकी शक्तिके सामने अपनी स्वतंत्रताको कायम रख सकें।

मौजूदा पूंजीपतियोंके साथ वे अपने ट्रस्टीशिपके सिद्धान्त पर अमल करके निबटना चाहते थे। पूंजीपतियोंको अुनकी सम्पत्तिका ट्रस्टी या संरक्षक बनाकर वे न सिर्फ लोगोंके लिअे ूंजीपतियोंका सा ही प्राप्त करना चाहते थे, बल्कि लोगोंके हितमें अुनकी प्रतिभा, योग्यता और कुशलताका भी अुपयोग करना चाहते थे। अिस तरह अुन्होंने दुनियाकी आज तककी जानी हुअी किसी भी क्रांतिसे ज्यादा विशाल और व्यापक क्रांतिकी कल्पना की थी। धनिक वर्गको पीढ़ियोंके अनुभव और विशिष्ट कुशलतासे व्यावसायिक प्रतिभा प्राप्त हुअी है। अगर अुन्हें केवल अपने या अपने परिवारके लिअे धन पैदा करनेके बजाय सारे राष्ट्रके लिअे धन पैदा करनेको राजी किया जा सके, तो वे राष्ट्रीय पुनर्निर्माणके काममें बहुत बड़ी मदद कर सकते हैं। जाग्रत लोकमतका दबाव

www.vinoba.in

—जरूरत पड़ने पर अहिंसक असहयोगकी शक्तिकी सहायतासे —धनिकोंके अिस हृदय-परिवर्तनमें मदद पहुंचा सकता है। जो थोड़े लोग अिसके लिअे राजी नहीं होंगे, अुन्हें अन्तमें कानूनकी मददसे रास्ते पर लाया जा सकेगा। कोअी काल्पनिक समझकर अिस विचारकी अुपेक्षा न करें। यहां हमारे राजा-महाराजाओंका अुदाहरण दिया जा सकता है। अुन्होंने अधिकतर स्वेच्छासे अपनी जो कायापलट होने दी, अुसे हमने अपनी आंखोंसे देखा है। देशके लगभग अेक-तिहाअी भागके देशी राज्योंमें यह जो अपूर्व क्रांति हुअी है, अुसके महत्त्वको हम कम न मानें। जो लोग राजाओंके जेवखर्च या भत्तोंमें मीन-मेख निकालते हैं, वे अिस बातकी ओर अपनी नजर न रखें कि राजाओंके पास क्या क्या रहने दिया गया है, बल्कि यह देखें कि अुन्होंने कितना भारी त्याग किया है। यह कोअी मामूली बात नहीं है कि अुनमें से कअी राजाओंने पिछले आम चुनावोंमें भाग लिया और वे प्रजाके पास अपना वोट मांगनेके लिअे गये। यह खामोश क्रांति, जिसने सैकड़ों निरंकुश राजाओंको लोकतंत्रके सिद्धान्तको माननेवाले नागरिक बना दिया है, दुनियाके अितिहासमें अनोखी चीज है। यह चमत्कार सरदार पटेलकी बुद्धिमत्ता और शक्तिका परिणाम है। मैं वह दृश्य कभी नहीं भूल सकती, जब सरदार देशके सारे राजा-महाराजाओंके बीच बैठकर चतुराअीसे अुन्हें अपनी सम्पूर्ण सत्ताका त्याग करनेके लिअे राजी कर रहे थे और अितने पर भी अुनमें से हरअेक अुन्हें अपना सबसे बड़ा मित्र समझता था, जैसे कि वे सचमुच थे भी!

बेशक, सरदारके पीछे राज्यकी शक्ति थी। लेकिन वह शक्ति अुन्हें काममें नहीं लेनी पड़ी। विनोबा भावे अिस प्रक्रियामें अेक कदम और आगे बढ़ गये हैं। वह दुबला-पतला, कमजोर छोटा व्यक्ति अेक राज्यसे दूसरे राज्यमें पैदल घूमकर हर जगह प्रचण्ड नैतिक शक्ति पैदा कर रहा है। गांधीजीने दक्षिण अफ्रीका और भारतके अपने प्रयोगों द्वारा निश्चित रूपसे यह सिद्ध कर दिखाया था कि अहिंसा सामाजिक और राजनैतिक अन्यायोंको दूर करनेमें पूरी तरह कारगर हो सकती है। विनोबा केवल नैतिक अपील द्वारा आर्थिक क्रांतिको जन्म देकर आज अुस चित्रको पूरा कर रहे हैं, जिसमें गांधीजी और सरदार पटेलने रंग भरना शुरू किया था। लोग हजारोंकी तादादमें मेहनत-मशक्कत करनेवाले बेजमीन गरीबोंके लिअे जमीनका दान दे रहे हैं। आप जानते हैं कि किसी जायदादके मालिकसे अुसकी जायदाद छुड़ाना कितना कठिन होता ह। आरम्भ तो छोटा है, लेकिन अुसके गर्भमें प्रचण्ड शक्ति भरी हुअी है। विनोबा सामाजिक जागरणके अुस युगको जन्म दे रहे हैं, जो किसी सामाजिक कानूनको कारगर बनानेकी पूर्व भूमिका तैयार करता है। आपमें से कुछ नौजवान विद्यार्थियोंको अपनी छुट्टियोंमें जाकर विनोबाजीके साथ पैदल घूमना चाहिये। आपको लगेगा कि अुनके सहवाससे आप अूंचे अुठ रहे हैं। हमारी भारत-भूमि अभी नैतिक दृष्टिसे दिवालिया नहीं हो गअी है। भारतके लोग अुनको आदर्शनिष्ठासे की जानेवाली अपीलको सुनते हैं और अुस पर अमल करते हैं, बशर्ते वह अैसे व्यक्तियों द्वारा की जाय जो अपने अुपदेशों पर खुद अमल करते हैं।

गांधीजीके व्यक्तित्वकी थाह लेना महासागरमें गोता लगाने जैसा है। अुसकी गहराअीकी कोअी थाह नहीं है। हमारे पास जो थोड़ा समय है, अुसमें मैं अुनके विराट् व्यक्तित्वकी यहां वहांसे कुछ झांकियां ही आपके सामने रख सकती हूं। अंधा अविश्वास भी अुतना ही खतरनाक है, जितनी कि अंधी मूर्ति-पूजा। मैं नहीं चाहती कि हमारे नौजवान अंधी नास्तिकताके कारण अितिहासके अेक महानसे महान पुरुषकी अुस शिक्षासे वंचित रहें, जो युद्धोंसे अूबी हुअी दुनियाको शांतिकी आशा दिलाती है और जिसने अुस आशाके लिअे अेक ठोस आधार पैदा करनेकी काफी संभावनायें दिखाअी हैं।

विश्वविद्यालयके शान्त और अेकान्त वातावरणमें अुस महा-पुरुषके व्यक्तित्वका अच्छेसे अच्छा वैज्ञानिक और तटस्थ अध्ययन किया जा सकता है। अिस समृद्ध विरासत पर आप लोगोंका अधिकार है, जो भारतके भावी निर्माता हैं; यह आपके, भारतके और सारे जगतके हितमें है कि आप अुसका अच्छेसे अच्छा अुपयोग करें। भारतमें अभी जो कुछ करना बाकी है, अुसकी चिन्ता करके निराश होनेके बजाय जो कुछ अभी तक हो चुका है अुससे आपको सबक लेना चाहिये और अपूर्ण कार्यको पूरा करनेके लिअे कमर कसकर तैयार हो जाना चाहिये। राष्ट्रके कुशल निर्माताने मजबूत बुनियादें डालकर अुन पर अेक विशाल अिमारतका ढांचा खड़ा कर दिया है। अब जब यह विशाल भवन पूरा होनेको आया है, तब हम अपने आदर्शमें कोअी कमी न आने दें। हम अुस अुत्तम योजनामें रही कमियां पूरी करते रहें और अुस भवनको सम्पूर्ण बना दें, ताकि वह अेक दिन अिस धरती पर शांति और सद्-भावनाके युगके आगमनकी घोषणा कर सके, जिसे हमारे राष्ट्र-पिताने रामराज्य कहा है।

(अंग्रेजीसे)

अंग्रेजीका जुल्म

श्रीमान् संपादक महोदय, हरिजनसेवक, नमस्ते।

पंजाब विश्वविद्यालयकी मैट्रिक्युलेशन परीक्षाके प्रश्नपत्र हिन्दी, संस्कृत, पंजाबी, फारसी विषयोंके अतिरिक्त और सब अंग्रेजीमें होते हैं। परीक्षार्थियोंको यह सुभीता होता है कि वे अुत्तर हिन्दी, पंजाबी या अुर्दूमें अपनी अिच्छानुसार दे सकते हैं। लेकिन आजकी बदली हुअी परिस्थितिमें ये प्रश्नपत्र अिन्हीं भाषाओंमें क्यों न छापे जावें? मेरी संमतिमें विश्वविद्यालयका यह अन्याय है। अिससे विद्यार्थी, अध्यापक, पुस्तक-विक्रेता सब परेशान तथा किंकर्तव्य-विमूढ़ हो रहे हैं। विश्वविद्यालयको अिस ओर ध्यान देना चाहिये, ताकि जनताकी बेचैनी दूर हो। मैं २५ वर्षके अनुभवसे यह कह सकता हूं कि प्रश्नपत्र समझनेमें विद्यार्थी आजसे नहीं बहुत समयसे व्याकुल रहे हैं। बालक प्रश्न समझे बिना अुत्तर दे देते हैं, जिसके परिणाम-स्वरूप अुन्हें परीक्षामें असफल होना पड़ता है। विद्यार्थियोंकी अिस कठिनाअीको दूर करनेमें विश्वविद्यालयको पूरा-पूरा सहयोग देना चाहिये।

मथुरादास

[लेखककी यह बात बिलकुल ठीक है। युनिवर्सिटी अितना क्यों नहीं समझती, यही आश्चर्य है। —म० प्र०]

विषय-सूची

		पृष्ठ
भारतकी आर्थिक रचना	गांधीजी	९७
गांधीजीकी मजदूर-नीति	खंडुभाअी देसाअी	९८
विकेन्द्रीकरण	विल्फ्रेड वेलॉक	९९
हमें नअी आर्थिक नीति चाहिये	मगनभाअी देसाअी	१००
भूदान-यज्ञके लिअे हमारा तात्कालिक कार्यक्रम	विनोबा	१०१
हमारी महान विरासत — ५	सुशीला नय्यर	१०३
टिप्पणी :		
अंग्रेजीका जुल्म	मथुरादास	१०४

www.vinoba.in